१. चाँदनी रात

– मैथिलीशरण गुप्त

आसपास

आपके परिवेश के किसी सुंदर प्राकृतिक स्थल का वर्णन निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● सुंदर प्राकृतिक स्थल का नाम तथा विशेषताएँ बताने के लिए कहें । ● वहाँ तक की दूरी तथा परिवहन सुविधाएँ पूछें । ● निवास-भोजन आदि की व्यवस्था के बारे में चर्चा करें । ● प्राकृतिक संपत्तियों पर आधारित उद्योगों के नामों की सूची बनवाएँ ।

चारु चंद्र की चंचल किरणें
खेल रही हैं जल-थल में ।
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है
अवनि और अंबर तल में ।।

पुलक प्रगट करती है धरती
हरित तृणों की नोकों से ।
मानो झूम रहे हैं तरु भी
मंद पवन के झोंकों से ।।

क्या ही स्वच्छ चाँदनी है यह
है क्या ही निस्तब्ध निशा ।
है स्वच्छंद-सुमंद गंध वह
निरानंद है कौन दिशा ?

बंद नहीं, अब भी चलते हैं
नियति नटी के कार्य-कलाप ।
पर कितने एकांत भाव से
कितने शांत और चुपचाप ।।

परिचय

जन्म : ३ अगस्त १८८६, चिरगाँव, झाँसी (उ.प्र.)
मृत्यु : १२ दिसंबर १९६४ **परिचय :** मैथिलीशरण गुप्त जी खड़ी बोली के महत्वपूर्ण कवि हैं । आपकी रचनाएँ मानवीय संवेदनाओं, विशेषत: नारी के प्रति करुणा की भावना से ओतप्रोत हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : साकेत (महाकाव्य),यशोधरा, जयद्रथ वध, पंचवटी, भारत-भारती (खंडकाव्य), रंग में भंग, राजा-प्रजा (नाटक) आदि

पद्य संबंधी

खंडकाव्य : इसमें मानव जीवन की किसी एक ही घटना की प्रधानता होती है । प्रासंगिक कथाओं को इसमें स्थान नहीं मिलता ।

प्रस्तुत अंश 'पंचवटी' खंडकाव्य से लिया गया है । प्रकृति की छटा का सुंदर रूप बड़े ही माधुर्य के साथ अभिव्यंजित हुआ है । चाँदनी रात का मनोहारी वर्णन सुंदर शब्दों में चित्रित किया है ।

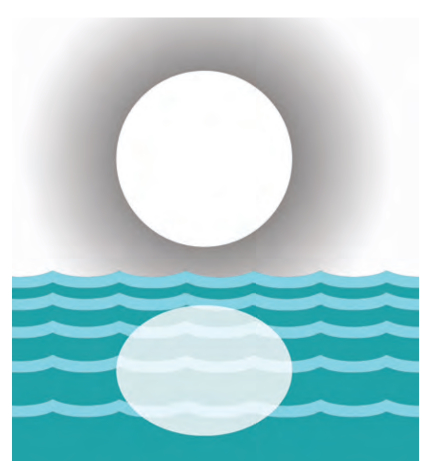

bharatdiscovery.org/india/मैथिलीशरण_गुप्त

है बिखेर देती वसुंधरा
मोती, सबके सोने पर ।
रवि बटोर लेता है उनको
सदा सबेरा होने पर ।।

और विरामदायिनी अपनी
संध्या को दे जाता है ।
शून्य श्याम तनु जिससे उसका
नया रूप छलकाता है ।।

पंचवटी की छाया में है
सुंदर पर्ण कुटीर बना ।
उसके सम्मुख स्वच्छ शिला पर
धीर-वीर निर्भीक मना ।।

जाग रहा यह कौन धनुर्धर
जबकि भुवन भर सोता है ?
भोगी कुसुमायुध योगी-सा
बना दृष्टिगत होता है ।।

—०—

('पंचवटी' से)

शब्द संसार

पुलक (पुं.सं.) = रोमांच, खुशी
कार्य कलाप (पुं.सं.) = गतिविधि
कुटीर (स्त्री.सं.) = झोंपड़ी, कुटिया
निर्भीक (वि.) = निडर
धनुर्धर (पुं.सं.) = तीरंदाज
कुसुमायुध (पुं.सं.) = अनंग, कामदेव
दृष्टिगत (वि.) = जो दिखाई पड़ता हो

कल्पना पल्लवन

'पुलक प्रगट करती है धरती हरित तृणों की नोकों से,' इस पंक्ति का कल्पना विस्तार कीजिए ।

पठनीय

संचार माध्यमों से 'राष्ट्रीय एकता' पर आधारित किसी समारोह की जानकारी पढ़िए ।

श्रवणीय

अपने घर-परिवार के बड़े सदस्यों से लोककथाओं को सुनकर कक्षा में सुनाइए ।

लेखनीय

'प्रकृति मनुष्य की मित्र है', स्पष्ट कीजिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) संजाल :

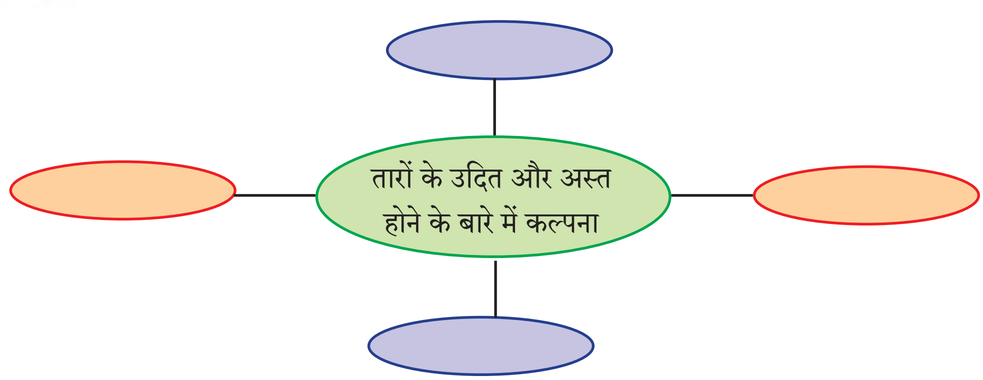

(ख) चाँदनी रात की विशेषताएँ :

१. ____________ ५. ____________

२. ____________ ६. ____________

३. ____________ ७. ____________

४. ____________ ८. ____________

(२) निम्नलिखित पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए :

(च) चारु चंद्र .... झोंकों से ।

(छ) क्या ही स्वच्छ .... शांत और चुपचाप ।

8CE459

पाठ से आगे

दिए गए शब्दों का उपयोग करते हुए स्वरचित कविता बनाकर काव्यमंच पर प्रस्तुत कीजिए ।

- तारे
- आकाश
- पर्वत
- नदी
- पृथ्वी

संभाषणीय

शरद पूर्णिमा त्योहार के बारे में चर्चा कीजिए।

भाषा बिंदु

निम्न शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :-

पर्यायवाची

- तरु → ______ , ______ , ______
- वसुंधरा → ______ , ______ , ______
- चंद्र → ______ , ______ , ______
- कृषक → ______ , ______ , ______
- उद्‌यान → ______ , ______ , ______
- अरण्य → ______ , ______ , ______

रचना बोध

....

....

....